तुलनात्मक राजनीति : प्रकृति

तुलनात्मक राजनीति एक स्वतंत्र अनुशासन बनने कि दिशा में अग्रसर है। इसकी अध्ययन संबंधी स्वविकसित पद्धतियों और प्रवृतियों ने इसके सवतंत्र अनुशासन बनने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेषकर छठे दशक के बाद से जब कई राजनीति वैज्ञानिकों द्वारा अंतर देशीय तुलनाओं और विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों की तुलना के लिए नयी नयी पद्धतियां अपनाई जाने लगी, तुलनात्मक राजनीति के विकास को बहुत बल मिला। अरस्तु के समय से आज तक तुलनात्मक राजनीति का एक अनुशासन के रूप मे जो विकास हुआ है उसके अध्ययन के आधार पर इसकी प्रकृति संबंधी विचारों को दो प्रमुख धारणाओं में विभक्त किया जा सकता है। राजनीति शास्त्र के विद्वान और तुलनात्मक राजनीति के विचारकों ने राजनीतिक व्यवहारों के अध्ययन के लिए जो विधियां अपनाई हैं उनके आधार पर तुलनात्मक राजनीति की प्रकुति इन्हीं दोनो धारणाओं के अध्ययन से स्पष्ट होती है। ये दो धारणाएं हैं –

क) तुलनात्मक राजनीति लम्बात्मक तुलना है

ख) तुलनात्मक राजनीति अम्बरान्तीय तुलना है

क). तुलनात्मक राजनीति के लम्बात्मक धारणा के समर्थकों के अनुसार तुलनात्मक राजनीति एक ही देश मे स्थित विभिन्न स्तरों पर स्थापित सरकारों और उनको प्रभावित करने वाले राजनीतिक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण है। इस विचारधारा के समर्थक विद्वान मानते हैं कि एक हि देश में कई स्तरों पर सरकारें होती हैं। जैसे, संघात्मक व्यवस्था वाले देशों में राष्ट्रीय और प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर की सरकारें होती हैं। एकात्मक व्यवस्था वाले राज्यों में एक राष्ट्रीय और कई स्थानीय सरकारें होती हैं। इस धारणा के समर्थक विद्वान मानते हैं कि एक ही राज्य में विभिन्न स्तरों पर स्थापित सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन ही लम्बात्मक तुलना है। इनके अनुसार **तुलनात्मक राजनीति एक ही देश की विभिन्न सरकारों की लम्बात्मक तुलना** है।

लेकिन तुलनात्मक राजनीति की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार एक ही देश की विभिन्न स्तरों पर स्थापित सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन करके हम राजनीतिक व्यवहार के संबंध में जो सामान्य नियम स्थापित करने की कोशिश करेंगे वो तर्कसंगत रूप से उपयुक्त नहीं होगा। क्योंकि एक ही देश में स्थित राष्ट्रीय और आंशिक सरकारों के बीच दिखाई देने वाली समानता और असमानता का स्वरूप सतही होता है। गहराई मे जा कर इनका विवेचन करने पर वास्तविकता कुछ और ही दिखाई पड़ती है। जैसे, यदि हम दोनो स्तर की सरकारों को प्राप्त शक्तियों का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि राष्ट्रीय सरकारों की शक्ति में अवपीड़न का तत्व प्रमुख रूप से पाया जाता है और इस शक्ति के कारण राष्ट्रीय सरकार प्रांतीय सरकारों की तुलना में न केवल श्रेष्ठ और उच्च होती है बल्कि अधिक स्थायी और मजबूत भी होती है। उसी प्रकार आर्थिक साधनों की समानता के संदर्भ में यदि राष्ट्रीय सरकार के आर्थिक साधनों को, स्त्रोत आकार और सम्भावनाओं की दृष्टि से देंखें तो यह बहुत व्यापक दिखाई देते हैं जिनका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के प्रत्येक व्यक्ति व स्थान से होता है। जबकि स्थानीय सरकारों के साधन इतने व्यापक नहीं होते।

स्पष्ट है कि ऊपरी समानताओं के बावजूद राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारों में असमानताएं अधिक हैं। इसलिए तुलनात्मक राजनीति में एक ही देश की विभिन्न स्तरीय सरकारों का तुलनात्मक विश्लेषण समान्य नियमों

की स्थापना में सहायक नहीं होगा। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि तुलनात्मक राजनीति की व्याख्या एक लम्बात्मक अध्ययन और तुलना के रूप में नहीं कि जा सकती। एक जैसी विषय परिधि के अभाव के कारण इससे प्राप्त निष्कर्ष प्रमाणिक नहीं होंगे और इससे जो सिद्धांत बनेंगें वो भी व्यवहारिक नहीं होंगे। राजनीतिक व्यवहारों की वास्तविकताओं को समझने में ये कतई उपयोगी सिद्ध नहीं होंगें।

ख). तुलनात्मक राजनीति अम्बरान्तीय तुलना है – तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति संबंधी दूसरी धारणा के अनुसार यह राष्ट्रीय सरकारों का अम्बरान्तीय तुलनात्मक अध्ययन है। इस धारणा के अंतर्गत दो स्तरों पर राजनीतिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। **पहला**, एक ही देश की विभिन्न कालों में विद्यमान राष्ट्रीय सरकारों की तुलना, तथा **दूसरा**, विश्व की सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन। एक ही देश की विभिन्न कालों में विद्यमान राष्ट्रीय सरकारों की तुलना के क्रम में देश की राजनीतिक व्यवस्था की लम्बी एतिहासिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है। इसमें वर्तमान की राजनीतिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और राजनीतिक व्यवहारों का तुलनात्मक विश्लेषण अतीत के संदर्भ में ही व्यवस्थित ढ़ंग से किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि भारत के संदर्भ में देंखें तो यह तुलना प्राचीन भारत की राष्ट्रीय सरकारों, मध्यकालीन भारत और ब्रिटिश कालीन भारत की राष्ट्रीय सरकारों तथा आधुनिक भारत की राष्ट्रीय सरकारों में की जा सकती है। स्वतंत्र भारत की वर्तमान राष्ट्रीय सरकार की व्यवहार की विशेषताओं को अतीत से तुलना करके और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

लेकिन राष्ट्रीय सरकारों की इस प्रकार की तुलना तुलनात्मक राजनीति के उद्देश्य को पूरा नहीं करती है। इस प्रकार की तुलना से केवल राज्य की राष्ट्रीय सरकारों को विभिन्न कालों में समझने में ही सहायता मिलती है।उस राष्ट्र से भिन्न प्रकार की संस्कृति, सभ्यता व संगठन वाले राज्य में संचालित सरकार की प्रकृति और राजनीतिक व्यवहार को समझने में सहायता नहीं मिलती। अतः तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति संबंधी **सर्वमान्य धारणा** आज यही है कि यह समकालीन विश्व में प्रचलित **राष्ट्रीय सरकारों का तुलनातमक अध्ययन** है। इस प्रकार की तुलनाओं से न केवल राजनीतिक व्यवहारों के संबंध में सामान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जा सकता है बल्कि इससे राजनीतिक घटनाओं का स्पष्टीकरण भी किया जा सकता है। इससे राजनीतिक संस्थाओं और व्यवस्थाओं की प्रकृति और कार्यविधि को भी समझा जा सकता है।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति के संबंध में उपरोक्त विवेचना से **संक्षेप में हम इसकी प्रकृति** को निम्न रूप में दर्शा सकते हैं–

1. तुलनात्मक राजनीति एक नया अनुशासन है।

2. यह विभिन्न राजकीय और गैर राजकीय संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

3. यह राजनीतिक व्यवहारों के संबंध में सामान्य नियमों की स्थापना करता है।

4. तुलनात्मक राजनीति का झुकाव वैज्ञानिक विधियों को अपनाने की ओर अधिक है।

5. तुलनात्मक राजनीति का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि तुलनात्मक राजनीति एक ही देश की राष्ट्रीय सरकारों का ऐतिहासिक संदर्भ में अध्ययन करने के साथ साथ पूरे विश्व की राष्ट्रीय सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, साथ

ही राजनीतिक प्रक्रियाओं और राजनीतिक व्यवहार तथा सरकारी तंत्रों को प्रभावित करने वाली गैर सरकारी व्यवस्थाओं का भी तुलनात्मक अध्ययन करता है।

तुलनात्मक राजनीति का विषयक्षेत्र :–

तुलनात्मक राजनीति वर्तमान समय में एक स्वतंत्र अनुशासन बनने कि ओर अग्रसर है। इस कारण राज्य वैज्ञानिकों में इसके विषय क्षेत्र को लेकर काफी विवाद है। कुछ वैज्ञानिकों द्वारा इसके अध्ययन क्षेत्र में केवल राष्ट्रीय सरकारों के बीच की समानताओं और असमानताओं को ही शामिल किया जाता है, जो इसके क्षेत्र को अत्यधिक संकुचित बना देते हैं। जबकि कुछ विद्वानों द्वारा राजनीति संबंधी सारे क्षेत्रों को शामिल करने के कारण इसकी स्वतंत्र अनुशासन होने पर ही प्रश्न चिन्ह खड़ा हो जाता है। इसलिए इसके विषय क्षेत्र की प्रमुख समस्या यह बन जाती है कि इसके अध्ययन में किन पहलुओं को शामिल किया जाए और किन्हें छोड़ दिया जाए? साथ ही राजनीति संबंधी किसी पहलू को शामिल करने का आधार क्या हो?

परम्परावादी राज्य वैज्ञानिकों और आधुनिक राज्य वैज्ञानिकों में इसके विषय क्षेत्र को लेकर **मतभेद** है। इनके बीच उत्पन्न विवाद इन अर्थों में स्पष्ट होता है कि जहां परम्परावादी विद्वान तुलनात्मक राजनीति को केवल सरकार की औपचारिक संरचनाओं के अध्ययन तक सीमित मानते हैं, वहीं आधुनिक राज्य वैज्ञानिक राज्य की औपचारिक संस्थाओं के अध्ययन के साथ साथ राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले अनऔपचारिक संस्थाओं जैसे – विधायकों की भूमिका, मतदाताओं के व्यवहार, राजनीतिक दलों और दबाव समूहों के प्रभावों का भी अध्ययन करते हैं। इसके अध्ययन क्षेत्र के संबंध में विद्यमान मतभेदों को देखते हुए सामान्य तौर पर इस विवाद को दो श्रेणीयों में रखा जाता है। **पहला**, तुलनात्मक राजनीति की सीमा संबंधी विवाद और **दूसरा**, मानकों और व्यवहारों के विवेचन संबंधी विवाद।

- **सीमा संबंधी विवाद–**
  तुलनात्मक राजनीति के विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि इसका संबंध राष्ट्रीय सरकारों के तुलनात्मक अध्ययन से है और इसमें केवल सरकारी संस्थाओं का ही नहीं बल्कि गैर सरकारी संस्थाओं और उनके कार्यों का अध्ययन भी शामिल है। लेकिन विवाद का बिन्दू यह है कि सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के किस तरह के कार्यों को इसके अध्ययन के अंतर्गत शामिल किया जाए। यहां दो तरह के दृष्टिकोणों की चर्चा होती है। **1. कानूनी या संस्थागत दृष्टिकोण**, जिसके अनुसार तुलनात्मक राजनीति में केवल संविधान द्वारा स्थापित सरकारी संरचना, तथा संविधान द्वारा निर्धारित राजनीतिक व्यवहारों का ही तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। जैसे यह विधायिका के कार्यों के अध्ययन की बात तो करता है लेकिन विधायिका किन व्यवहारों से प्रभावित होकर कार्य करती है उनके अध्ययन की बात नहीं करता। इन व्यवहारों को यह निरर्थक और अनुपयोगी मानता है। जबकि राजनीतिक व्यवहारों की वास्तविकताओं को समझने के लिए इन व्यवहारों का अध्ययन आवश्यक होता है। **2. व्यवहारवादी दृष्टिकोण**, यह दृष्टिकोण राजनीतिक व्यवस्था के वास्तविक व्यवहार के अध्ययन पर बल देता है। इसके अनुसार तुलनात्मक राजनीति में राष्ट्रीय संस्थाओं और गैर राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहार से संबंधित सारे तथ्यों को एकत्रित करके विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं की तुलना करनी चाहिए। इस प्रकार से कि गई तुलना ही राजनीतिक वयवहार की वास्तविकता को समझने में उपयागी होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक

व्यवहारों की वास्तविकता को समझने के लिए सरकार द्वारा स्थापित सरकारी संस्थाओं के अध्ययन के साथ साथ गैर राजकीय संस्थाओं, तथा उनकी कार्यविधि का अध्ययन भी आवश्यक है।

- **मानकों व व्यवहारों के संबंधों का विवाद–**

तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र संबंधी यह विवाद ज्यादा जटिल है। तुलनात्मक राजनीति के अंतर्गत समान प्रकर की व्यवस्थाओं के अध्ययन पर जोर दिया जाता है। हम एक लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश का दूसरी लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश से ही तुलना कर सामान्य नियमों की स्थापना कर सकते हैं, उसकी तुलना कीसी अधिनायकतंत्र, स्वेच्छारी व्यवस्था वाले देश से करके सामान्य सिद्धांतों का निर्माण नहीं कर सकते। भिन्न शासन व्यवस्था वाले देशों में राजनीतिक व्यवहार भी अलग अलग होते हैं। जिनका अध्ययन करना बहुत जटिल होता है। अगर सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक आचरण तय मानकों के अनुरूप होतें हैं तो तुलना करना सरल होता है। लेकिन साधारणतया ऐसा नहीं होता है। अतः ऐसी तुलनाओं के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष वास्तविकता के करीब नहीं होते। इसलिए तुलनात्मक राजनीति में इस बात का अध्ययन भी सम्मिलित होता है कि राजनीतिक व्यवहार मानकों के अनुकूल हैं या नहीं और उनका आधार क्या है?

तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र संबंधी उपरोक्त विवादों के विवेचन से इसके विषय क्षेत्र संबंधी निम्न बातें स्पष्ट होती हैं–

1. इसमें समकालीन विश्व में व्याप्त विभिन्न शासनव्यवस्थाओं और संगठनों की समानताओं और असमानताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

2. राजनीतिक व्यवस्था के तय मानकों और संबंधित व्यवहारों के संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

3. राजनीतिक व्यवस्था में निर्णय निर्माण को प्रभावित करने वाले राजकीय और गैर राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है।

4. एक ही देश में विभिन्न कालों में व्याप्त सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

5. यह एक मूल्यनिरपेक्ष अनुशासन है लेकिन मूल्यों का अध्ययन व्यवहारों के संदर्भ में करता है।

तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र के संबंध में एम. कर्टिस ने लिखा है कि, "राजनीतिक संसथाओं और राजनीतिक व्यवहारों की कार्य प्रणाली में महत्वपूर्ण नियमितताओं, समानताओं और असमानताओं से तुलनात्मक राजनीति का संबंध है।" अतः तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र के संबंध में यह कहा जा सकता है कि इसका संबंध शासन प्रणालियों की विभिन्नताओं और समानताओं दोनों से है।